Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 9 | Issue : 9 | September 2023



ऋणात्मक कार्यशील पूंजी का विश्लेषण

डॉ. हेमन्त कड़ूणिया

सहायक आचार्य, लेखा एवं व्यावसायिक सांख्यिकी विभाग, सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय महाविद्यालय, नाथद्वारा

ABSTRACT

कार्यशील पूंजी की तुलना वित्तीय रूप से कम्पनी की धड़कन से ही जा सकती है। यह उस पूंजी को इंगित करता है जो किसी व्यवससाय के पास दैनिक कार्यो की देखरेख और अल्पकालिक दायित्वों का भुगतान करने के लिए हैं। किसी कम्पनी के अल्पकालिक दायित्व उसकी अल्पकालिक सम्पत्तियों से अधिक होने की दशा में ऋणात्मक कार्यशील पूंजी उत्पन्न हो जाती है। ऋणात्मक कार्यशील पूंजी आम तौर पर ध्यान आकर्षण एवं सुधारात्मक कार्रवाई की मांग करती है, जबकि ऐसे मामले भी होते है जब यह संक्षिप्त या प्रबन्धनीय हो सकता है।

KEYWORDS: ऋणात्मक कार्यशील पूंजी, चालू परिसम्पत्ति, चालू दायित्व, जोखिम, नकद भण्डार, आपूर्तिकर्ता सम्बन्ध

प्रस्तावना

''कल्पना करें कि आपके पर्स में आपके क्रेडिट कार्ड पर बकाया राशि से कम पैसा है; एक फर्म को ऐसा तब महसूस होता है जब उसके पास ऋणात्मक कार्यशील पूंजी होती है। सीधे शब्दों में कहें तो, यह तब होता है जब किसी कम्पनी की चालू दायित्व उसके चालू सम्पत्तियों से अधिक हो जाता हैं आइए ऋणात्मक कार्यशील पूंजी का पता लगाएं और इसके प्रभाव और उपचार के बारे में जाने।

कार्यशील पूंजी की तुलना वित्तीय रूप से कम्पनी की धड़कन से ही जा सकती है। यह उस पूंजी को इंगित करता है जो किसी व्यवससाय के पास दैनिक कार्यो की देखरेख और अल्पकालिक दायित्वों का भुगतान करने के लिए हैं। सीधे शब्दों में कहें तो यह वह पैसा है जो आपके बिजनेस वॉलेट में खर्चो को कवर करने, सामग्री को खरीदने और परिचालन को बनाए रखने के लिए है।

कार्यशील पूंजी निकालने के लिए आपके पास जो कुछ देय राशि अल्पकालिक सम्पत्ति है, उसमें से चालू दायित्व को घटा देते हैं। नकदी, ग्राहकों द्वारा देय राशि और सामग्री (कच्चा माल, चालू कार्य एवं निर्मित माल) आदि अल्पाािलिक परिसम्पत्तियों के उदाहरण हैं। दूसरी ओर, अल्पकालिक दायित्वों में अन्य अल्पकालिक दायित्वों साथ–साथ आपूर्तिकर्ताओं, लेनदारों या कर्मचारियों को देय राशि शामिल होती है।

कार्यशील पूंजीः चालू परिसम्पत्तियां – चालू दायित्व

किसी व्यवसाय के चिट्ठे में निम्न परिसम्पत्तियां एवं दायित्व है –

राम एन्टरप्राइजेज – बैंक में नकद 26,000रू., देनदारियां 15,000रू., सामग्री 51,000रू., अल्पकालिक निवेश 8,000रू. देय खातें 27,000रू. अल्पावधि ऋण 13,000रू.।

महेश एन्टरप्राइजेज – बैंक में नकद 16,000रू., देनदारियां 15,000रू., सामग्री 26,000रू., अल्पकालिक निवेश 8,000रू. देय खातें 47,000रू. अल्पावधि ऋण 23,000रू.।

इस सूचना के आधार पर कार्यशील पूंजी निम्न प्रकार होगी –

	रू.	रू.
बैंक में नकद	26,000	16,000
देनदारियां	15,000	15,000
सामग्री	51,000	26,000
अल्पकालिक निवेश	8,000	8,000
कुल चालू सम्पत्तियाँ	1,00,000	65,000
देय खातें	27,000	47,000
अल्पावधि ऋण	13,000	23,000
कुल चालू दायित्व	40,000	70,000
कार्यशील पूंजी (कुल चालू सम्पत्तियाँ–कुल चालू दायित्व)	60,000	(5,000)

इसका मतलब यह है कि आपकी कम्पनी के पास अपने चल रहे दायित्वों और परिचालन लागतों का भुगतान करने के लिए 60,000रू. उपलब्ध है। एक सकारात्मक कार्यशील पूंजी आपकी कम्पनी की परिसम्पत्तियां के साथ अपने अल्पकालिक दायित्वों को भुगतान करने की क्षमता को दर्शाती है, जिसे अक्सर मजबूत वित्तीय स्थिति को संकेत माना जाता है। इसके विपरित ऋणात्मक कार्यशील पूंजी संस्था की कमजोर वित्तीय स्थिति को दर्शाता है। ऋणात्मक कार्यशील पूंजी तब होती है जब चालू परिसम्पत्तियां का कुल मूल्य चालू दायित्वों की राशि से कम हो। इसका मतलब होगा कि आपकी कम्पनी को अपने अल्पाािलिक दायित्वों का भुगतान करना मुश्किल हो सकता है। इस मामले में, आपको वित्तीय असंतुलन को ठीक करने के लिए कार्रवाई करने की आवश्यकता होगी, जैसे अतिरिक्त वित्त पोषण प्राप्त करना या नकदी प्रवाह प्रबन्धन को बढ़ाना। क्या कम कार्यशील पूंजी अनुपात एक बुरी बात है? ऋणात्मक कार्यशील पूंजी को आम तौर पर एक चेतावनी संकेतक के रूप में माना जाता है और अक्सर इसकी व्याख्या कम्पनी की वित्तीय स्थिति के प्रतिकूल होने के रूप में की जाती है। यह दर्शाता है कि किसी कम्पनी के अल्पकालिक दायित्व उसकी अल्पकालिक सम्पत्तियों से अधिक है। ऋणात्मक कार्यशील पूंजी आम तौर पर ध्यान आकर्षण एवं सुधारात्मक कार्रवाई की मांग करती है, जबकि ऐसे मामले भी होते है जब यह संक्षिप्त या प्रबन्धनीय हो सकता है।

ऋणात्मक कार्यशील पूंजी चिंताजनक क्यों है –

- **तरलता के लिए जोखिम –** एक कम्पनी अपनी अल्पकालिक वित्तीय जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए संघर्ष कर सकती है, जैसे कि पेरोल बनाना, आपूर्तिकर्ताओं को भुगतान करना, या अल्पकालिक दायित्व का भुगतान करना, अगर उसके पास ऋणात्मक कार्यशील पूंजी है। इससे तरलता सम्बन्धी समस्याएं पैदा हो सकती है और नियमित व्यावसायिक संचालन में बाधा उत्पन्न हो सकती है। उदाहरण के तौर पर ऋणातमक कार्यशील पूंजी वाली एक छोटी खुदरा कम्पनी पर विचार करें। हांलाकि इसके पास केवल 5,000रू. नकद और अन्य अल्पकालिक सम्पत्तियां है, फिर भी इसके आपूर्तिकर्ताओं पर इसका 10,000रू. बकाया है। यहद कम्पनी अपने विक्रेताओं को समय पर भुगतान करने में असमर्थ है तो उसे आपूर्ति श्रृंखला में रूकावट, आपूर्तिकर्ताओं के साथ तनावपूर्ण रिश्ते और सम्भावित सामग्री की कमी का अनुभव हो सकता है।
- **साख योग्यता –** कम कार्यशील पूंजी से किसी कम्पनी की साख प्रभावित

हो सकती है। किसी कम्पनी की ऋण चुकाने की क्षमता के कारण ऋणदाता, आपूर्तिकर्ता और लेनदार सावधान हो सकते हैं, जिससे ब्याज दरों में वृद्धि हो सकती है या क्रेडिट समझौते की शर्तें छोटी हो सकती है। उदाहरणः एक निर्माण कम्पनी जिसके पास ऋणातमक कार्यशील पूंजी है और वह एक नई परियोजना के लिए अल्पकालिक ऋण प्राप्त करने का प्रयास कर रही हैं। कथित जोखिम के परिणामस्वरूप, ऋणदाता उच्च ब्याज दरों की मांग कर सकते है।

- **दिवालियापन का जोखिम –** यदि तुरन्त नहीं सभांला गया, तो लगातार ऋणात्मक कार्यशील पूंजी अधिक गंभीरा वित्तीय मुद्दों का संकेत हो सकती है और अन्ततः दिवालियापन का परिणाम हो सकती है। यदि व्यवसाय बार बार अपनी प्रतिबद्धताओं का उल्लंघन करता है, तो वह संचालन जारी रखने में सक्षम नहीं हो सकता है। उदाहरण के तौर पर, ऋणात्मक कार्यशील पूंजी वाले रेस्तरां की श्रृंखला अपने आपूर्तिकर्ताओं, कर्मचारियों यर किराए का लगातार भुगतान करने के लिए संघर्ष कर सकती है। अगर चीजें नहीं बदलीं तो कम्पनी के भोजनालय बंद हो सकते है।
- **प्रतिस्पर्धात्मक नुकसान –** कम कार्यशील पूंजी वाले व्यवसायों को विस्तार की संभावनाओं को भुनाने, नए प्रयोसों को निधि देने या प्रभावी प्रतिस्पर्धा में शामिल होने में कठिनाई हो सकती है। बाजार के साथ विस्तार करने या विकसित होने में उनकी असमर्थता उनकी वित्तीय सीमाओं के कारण बाधित हो सकती है। उदहारण के तौर पर, ऋणात्मक कार्यशील पूंजी वाला एक तकनीकी स्टार्टअप अनुसंधान एवं विकास खर्च के लिए संसाधनों की कमी के कारण उत्पाद विकास का एक बड़ा मौका गवां सकता है।
- **तनावपूर्ण आपूर्तिकर्ता सम्बन्ध –** ऋणात्मक कार्यशील पूंजी आपूर्तिकर्ता सम्बन्धों को प्रभावित कर सकती है क्योंकि इससे भुगतान में देरी हो सकती है या खातों में देय चूक हो सकती है। जवाब में, आपूर्तिकर्ता क्रेडिट आवश्यकताओं को सख्त कर सकते हैं, छूट कम कर सकते हैं, या अपने उत्पादों या सेवाओं की पेशकश भी बन्द कर सकते है। उदाहरण के तौर पर, ऋणात्मक कार्यशील पूंजी वाले खुदरा विक्रेता को अपने कपड़े आपूर्तिकर्ताओं को समय पर भुगतान करना मुश्किल हो सकता है। प्रतिशोध में, ये आपूर्तिकर्ता पहले दी गई क्रेडिट अवधि को छोटा कर सकते है, जिससे स्टोर के लिए माल को फिर से भरना और कुशलता से चलाना और भी मुश्किल हो जाएगा। जब कोई व्यवसाय अक्सर कम कार्यशील पूंजी के कारण आपूर्तिकर्ताओं को भुगतान की समय सीमा से चूक जाता है, तो उसे महत्वपूर्ण आपूर्तिकताओं के साथ अपने सम्बन्धों में तनाव आने का खतरा रहता है। आपूर्तिकर्ता क्रेडिट की पेशकश बन्द कर सकते हैं या भुगतान करने के लिए अधिक कठिन शर्ते निर्धारित कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, ऋणात्मक कार्यशील पूंजी वाले कार निर्माता को अपने घटक आपूर्तिकार्ताओं को समय पर भुगतान करना मुश्किल हो सकता है। इसके परिणामस्वरूप भागों की कमी, विनिर्माण में रूकावट और महत्वपूर्ण आपूर्तिकर्ताओं के साथ तनावपूर्ण सम्बन्ध हो सकते हैं। ऋणात्मक कार्यशील पूंजी व्यवसाय पर क्या प्रभाव पड़ता है ? किसी कम्पनी की वित्तीय स्थिरता, संचालन और दीर्घकालिक संभावनाएं अन्य नकारात्मक परिणामों के साथ–साथ नकारात्मक कार्यशील पूंजी से भी नकारात्मक रूप से प्रभावित हो सकती हैं। यहां कुछ तरीके दिये गये है जिनके कम कार्यशील पूंजी होने से किाी कम्पनी को नुकासान हो सकता है।
- **तरलता पर सीमाएं –** ऋणात्मक कार्यशील पूंजी व्यवसायों के लिए चल रहे खर्चो का भुगतान करने के लिए लगातार र्प्याप्त नकदी प्रवाह उत्पन्न करना मुश्किल बना देती है। इससे तहलता की कमी हो सकती है और नियमित परिचालन लागत के प्रबन्धन में कठिनाइयां हो सकती है। उदाहरण : ऋणात्मक कार्यशील पूंजी वाले छोटे विनिर्माण व्यवसाय के लिए निर्धारित समय पर पेरोल भुगतान करना मुश्किल हो सकता है। परिणामस्वरूप कर्मचारियों का मनोबल खराब हो सकता है और कुशल लोग कहीं और काम की तलाशा शुरू कर सकते है।
- **साख पात्रता –** निवेशक, लेनदार और ऋणदाता ऋणात्मक कार्यशील पूंजी अनुपात को बढे हुए ऋण जोखिम और वित्तीय अस्थिरता का लक्षण मान सकते है। इससे उधार लेने की लागत बढ़ सकती है, ऋण तब पहुंच सीमित हो सकती है और निवेशकों को आकर्षित करने की क्षमता कम हो सकती है। उदाहरण के लिए, उद्यम पूंजी होने का इतिहास है क्योंकि यह उच्च स्तर के वित्तीय जोखिम का संकेत देता है।
- **परिचालन सम्बन्धी रूकावटें –** किसी कम्पनी की उपभोक्ता मांग को पूरा करने की क्षमता ऋणात्मक कार्यशील पूंजी के कारण होने वाले परिचालन सम्बन्धी व्यवधानों से बाधित हो सकती है। इससे आपूर्ति प्राप्त करने, उतपादन जारी रखने, या ऑर्डर की समय सीमा पूरी करने में परेशानी हो सकती है। उदाहरण : आपूर्तिकर्ताओं को देर से भुगतान के कारण, ऋणात्मक कार्यशील पूंजी वाले रेस्तरां श्रृंखला को नए उत्पाद प्राप्त करने में परेशानी हो सकती है। इसके परिणामस्वरूप मेनू की कमी और ग्राहक आनन्द में गिरावह का सामना करना पड़ सकता है।
- **सीमित विकास के अवसर –** कम कामकाजी नकदी वाले व्यवसायों को विकास के अवसरों का लाभ उठाना, अनुसंधान एवं विकास निवेश करना या नए बाजारों में प्रवेश करना मुश्किल हो सकता है। वे दीघकालिक रणनीतिक विकास के ऊपर तत्काल अस्तित्व को प्राथमिकता देने के लिए बाध्य हो सकते है। उदाहरणतः विपणन और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए धन की कमी के कारण, ऋणात्मक कार्यशील पूंजी वाली एक ई–कॉमर्स फर्म अपने संचालन को बढ़ाने और नए बाजारों में प्रवेश करने की संभावनाओं से चूक सकती है।
- **कम नकदी भण्डार –** यदि किसी संस्था का चालू दायित्व उसकी वर्तमान चालू सम्पत्तियों से अधिक हैं तो उसकी कार्यशील पूंजी ऋणात्मक है। इस घाटे को पूरा करने के लिए व्यवसाय को नकदी भण्डार का उपयोग करना पड़ सकता है या गतिविधियों से नकदी प्रवाह बढ़ाना पड़ सकता है। इससे कम्पनी का नकदी भण्डार खत्म हो सकता है और उसकी वित्तीय स्थिति कमजोर हो सकता है। ऋणात्मक कार्यशील पूंजी किसी व्यवसाय के लिए आपूर्तिकर्ताओं को भुगतान करने, परिचालन लागत को कवर करने और अल्पकालिक ऋण चुकाने सहित अल्पकालिक दायित्वों को पूरा करना मुश्किल बना सकती है। इसके परिणामस्वरूप भुगतान में देरी और लेनदारों और आपूर्तिकर्ताओं के साथ तनावपूर्ण रिश्ते हो सकतेळै। ऋणात्मक कार्यशील पूंजी वाले व्यवसायों के लिए अपने परिचालन को वित्तपोषित करने के लिए ऋण पर बढ़ी हुई निर्भरता आवश्यक हो सकती है। इससे ब्याज लागत और अधिक कर्ज बढ़ सकता है, जो नकदी प्रवाह पर नकारात्मक प्रभाव डालेगा। ऋणात्मक कार्यशील पूंजी अक्सर नकदी के अकुशल उपयोग को दर्शाती है। यह अक्षमता तत्काल आवश्यकताओं के लिए उपलब्ध धन की मात्रा को कम कर सकती है।
- **विकास पर प्रभाव –** किसी संगठन की विकास संभावनाओं में निवेश करने की क्षमता ऋणात्मक कार्यशील पूंजी से बाधित हो सकती है। इसे दीर्घकालिक निवेश के आगे अल्पकालिक तरलता रखने के लिए मजबूर किया जा सकता है, जिससे विस्तार, अनुसंधान एवं विकास, या रणनीतिक उद्देश्यों को आगे बढ़ाने की इसकी क्षमता कम हो जाएगी।
- **अंशधारकों पर प्रभाव –** जब किसी कम्पनी के पास ऋणात्मक कार्यशील पूंजी होती है, जो निवेशक उसकी वित्तीय स्थिरता के बारे में चिन्ता करना शुरू कर सकते है, जिससे निवेशकों का विश्वास कम हो सकता है और अंशों की कीमते कम हो सकती है। ऋणात्मक कार्यशील पूंजी से धन प्राप्त करना या नए निवेशकों को आकर्षित करना मुश्किल हो सकता है, जिससे निवेश आकर्षित करना मुशकिल हो सकता है। सम्भावित निवेशकों को कम्पनी अधिक जोखिम वाला निवेश प्रतीत हो सकती है।
- **आर्थिक मंदी का सामना करने की सीमित क्षमता –** ऋणात्मक कार्यशील पूंजी वाले व्यवसाय आर्थिक मन्दी या अप्रत्याशित वित्तीय झटके के दौरान विशेष रूप से कमजोर हो सकते है क्योंकि चुनौतिपूर्ण परिस्थितियों को संभालना के लिए उनके पास कम वित्तीय लचीलापन होता है।

ऋणात्मक कार्यशील पूंजी को नियंत्रित करने की रणनीतियाँ –

1. **नकदी प्रवाह प्रबन्धन को बढ़ाना –** ग्राहकों से नकदी संग्रह को अधिकतम करने, सामग्री में रखी नकदी को कम करने और, जब सम्भव हो, आपूर्तिकर्ताओं के साथ भुगतान की शर्तो को बढ़ाने के लिए अधिक प्रभावी नकदी प्रबन्धन तकनीकों को अपनाना।

2. **अल्पकालिक वित्तपोषण को सुरक्षित करना –** नकदी अन्तर को कम करने के लिए, अल्पकालिक वित्तपोषण जैसे क्रेडिट लाइन या कार्यशील पूंजी ऋण के विकल्पों पर गौर करें।
3. **विक्रेताओं और लेनदारों के साथ बातचीत –** नकदी प्रवाह बढ़ाने के लिए भुगतान की शर्तों को बढ़ाना या विक्रेताओं और लेनदारों से बेहतर मूल्य निर्धारण सुनिश्चित करना। संचालन को सुव्यवस्थित करने से व्यवसायों को दैनिक कार्यो में अक्षमताओं का पता लगाकर और उन्हे दूर करके खर्चो में कटौती करने और नकदी प्रवाह बढ़ाने में मदद मिल सकती है।
4. **बिक्री और राजस्व में वृद्धि –** बिक्री और राजस्व में वृद्धि से निचली रेखा को बढ़ने और अल्पकालिक दायित्वों का भुगतान करने के लिए अतिरिक्त नकदी प्रवाह उत्पन्न करने में मदद मिल सकती है। व्यावसायिक मूल्य पर ऋणात्मक कार्यशील पूंजी का प्रभाव किसी कम्पनी के मूल्यांकन पर ऋणात्मक कार्यशील पूंजी का काफी प्रभाव पड़ सकता है।

सारांश

कार्यशील पूंजी सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है जिसे निवेशक और सम्भावित खरीददार किसी कम्पनी का मूल्य निर्धारित करते समय ध्यान में रखते है। मूल्यांकन किसी कम्पनी का आर्थिक मूल्य निर्धारित करने की प्रक्रिया है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि किसी कम्पनी के मूल्यांकन पर ऋणात्मक कार्यशील पूंजी की स्थिति का प्रभाव स्थिति, उद्योग और व्यवसाय के विवरण के आधार पर बदल सकता है। उनके संचालन की प्रकृति और नकदी चक्र के कारण, कुछ व्यवसाय, विशेष रूप से कुछ उद्योगों में, लगातार ऋणात्मक कार्यशील पूंजी के साथ काम कर सकते है। इन परिस्थितियों में, खरीददार और निवेशक ऋणात्मक कार्यशील पूंजी को अधिक जटिल तरीके से देख सकते है। अपनी दीर्घकालिक व्यवहार्यता और लाभप्रदता को बनाए रखने के लिए, व्यवसायों को नियमित रूप से अपनी कार्यशील पूंजी का मूल्यांकन करना चाहिए और किसी भी नकारात्मक रूझान को सुधारने के लिए तुरन्त कार्य करना चाहिए।

REFERENCES

1. Panigrahi, C. M. A. (2014, January). Impact of Negative Working Capital on Liquidity and Profitability: A Case Study of ACC Limited. In International Conference, Prestige Institute of Management & Research, Indore during (pp. 30-31).
2. Baños-Caballero, S., García-Teruel, P. J., & Martínez-Solano, P. (2014). Working capital management, corporate performance, and financial constraints. Journal of business research, 67(3), 332-338.
3. ALShubiri, F. N. (2011). The effect of working capital practices on risk management: Evidence from Jordan. Global Journal of business research, 5(1), 39-54.
4. Qazi, H. A., Shah, S. M. A., Abbas, Z., & Nadeem, T. (2011). Impact of working capital on firms' profitability. African Journal of Business Management, 5(27), 11005.
5. Mohamad, N. E. A. B., & Saad, N. B. M. (2010). Working capital management: The effect of market valuation and profitability in Malaysia. International journal of Business and Management, 5(11), 140.